Page No.
Date

BA-(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट-थर्ड

Lecture-II

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
M.S.J. college, Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U)

सुन्दरकाण्ड (सप्रसंग व्याख्या):

3. "दया करथु से दर्शन देथु।
सुकृति समाज सहज-यश लेथु॥
शिव शम्भु से उपल प्रणाम।
हृदय राखि रघुनन्दन राम॥"

प्रस्तुत चौपाइ कविश्वर चन्दा झा विरचित मिथिलाभाषा रामायणक 'सुन्दरकाण्ड' सँ लेल गेल अछि। ई चौपाइ दशकण्ठ रावण द्वारा सीताहरण कें पश्चात् घटित घटनाक अछि। माता सीताक खोजमे सुग्रीव महाराजक समस्त सेना लागल अछि। मुदा माता सीता कतहु नहि भेटलीह तखन गिद्धराज जटायु सँ भेटल संकेत पर महाबली हनुमान सत योजन पार लंका देशमे खोज करबा लेल गेल छथि। महावीर हनुमान माता सीताकेँ पूर्वमे कहियो देखने त नहि छलाह तेँ उपयुक्त अवसर पर अशोक वनमे प्रकट होयब शोचित रहल छलाह। तेँ गाछक आड़मे दबकल छलाह आ पैह जानकी माता चिन्हतीह से चाहि रहल छलाह। महावीर हनुमान जे आश्रयमे सँ किछु बजला तकरे प्रतिअर्थमे माता

Scanned by TapScanner

जानकी कहैत छथि - हमरा किओ निहारि आयि
छथि जे हिनकर वचनसँ अद्भुत तोष भेटल ते हमरा
पर ध्यान दशीन देवु आ पश्चा के आगी बचौन।
तखन महावीर हनुमान कर जोड़ि माताकेँ आगा
बनखि। तखन महावीर हनुमान कर जोड़ि मानकैं प्रणाम
केलन, सन्देह उपस्थित होइत छथि। हनुमान प्रभु श्रीरामक
के मन-मन स्मरण के माता समक्ष एलाह। मुदा माता
सीताकेँ हनुमानक वचन पर विश्वास नहि होइत छन्हि।
होइत छन्हि जे कहीं रावण भेष बदलि वानरक
रूपमे हमरा मोहय त नै आयल अछि। हनुमानकेँ
तकर आभास भ जाइत छन्हि। तखन ओ प्रमाण
स्वरूप श्रीरामक देल मुद्रिका माताकेँ दैत छथि।
माताकेँ विश्वास होइत छन्हि।

66

5. "ब्रह्मास्त्रके कपि राखल मान।
अपनाइ बन्हला मन किछु आन॥"

प्रस्तुत पद्य कविश्वर चन्दा झा विरचित मिथिला-
भाषा रामायणक सुन्दरकाण्डक चौपाइ थिक। महावीर
हनुमान माता सीताक अन्वेषणमे लंकापुरी गेल छथि।
मातासँ लंकापुरीक अशोक उपवनमे भेंट भेलान्हे,
तत् पश्चात् भूखल लगलाक हनुमान अशोक
वाटिकाक फलसँ जलपान करबाक उद्देश्यसँ फल
तोड़ि खाय लगलाह त रक्षकगण हिनका लाठी-डण्टा
सँ मारय लागल तखन हनुमान रक्षकगणकेँ मारि-
मारि यमपुरी पठौलन्हि। बचल रक्षक रावणक
दरबार जाय सभ कथा सुना आयल। पहिने अक्षय
कुमार आयल, हिनको यमपुरी पठा देलन्हि।

तकर बाद क्रोध सँ अन्हुआएल मेघनाद ऐलाह।
हुनकर रथ आ सारथीकेँ मारि चूरि देलनि।
मेघनाद पुनि दोसर रथ पर सवार भ' आयल आ
ब्रह्मास्त्र प्रयोग कयलनि तखन महावीर श्री हनुमान
ब्रह्मास्त्रक मान रखबा लेल, ब्रह्मास्त्रक बन्धन केँ
स्वीकार क बन्हाय गेला। मेघनाद कपिकेँ ब्रह्मास्त्रमे
बान्हने रावणक दरबारमे ल जाइत छथि। रावण ओहि
समय कपि पर बड़ कोप कयल। मुदा दूत अवध्य
होइछ से जखन विभीषण कहल त रावण मानि गेलाह।
मुदा दण्ड देबाक निर्णय कपिक नांगरिमे मनकेमन
वस्त्र। घृत आ तेल सँ युक्त बान्हल गेल आ
आगि लगा देला। महावीर हनुमान परिचय कए
पर सूक्ष्म रूप सँ ओहि बन्धनसँ मुक्त भ। लंकापुरीकेँ
आगि लगा डाहि देलनि। आ सकुशल सागर
जाय नाङरिक आगि सँ मुक्त भेलाह।

Sanjay Kumar
29/08/20